प्रवेश 2

जैन पाठशाला हेतु पाठ्यक्रम

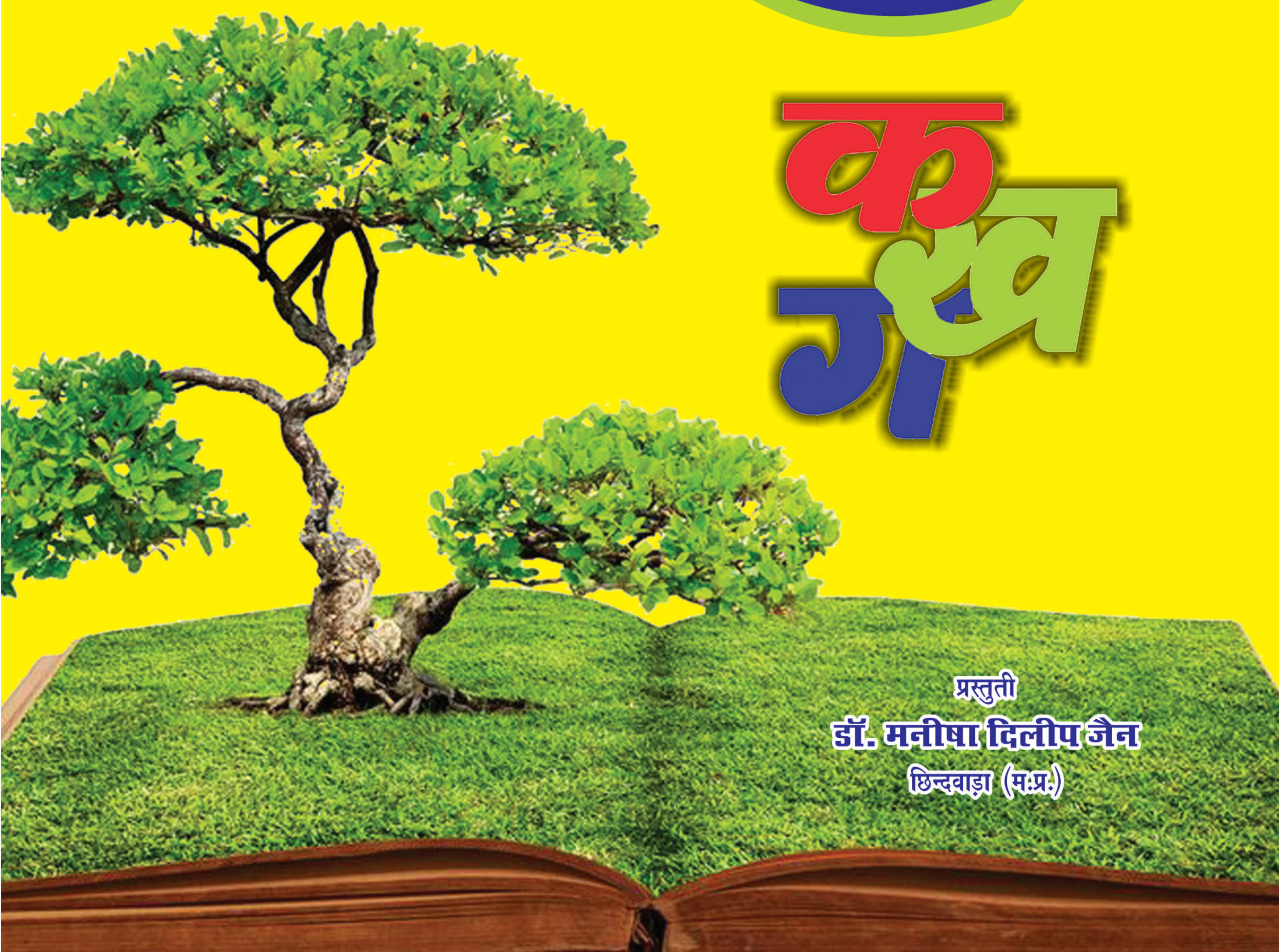

प्रस्तुति
डॉ. मनीषा दिलीप जैन
छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

प्रवेश - 2

जैन पाठशाला हेतु पाठ्यक्रम

प्रस्तुती

डॉ. मनीषा दिलीप जैन

त्रिलोकी नगर, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

प्रथम संस्करण : 2019

मुद्रक : प्रकृति प्रिंटर्स

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) मो. 8319637899

प्राप्ति स्थान :

(1) सिंघई शॉ मिल, छोटा तालाब, छिन्दवाड़ा

मो. 9826449970, 9827249825

9399938202

(2) 63 एंथम, गुडलापोचमपल्ली

जिला आरआर हैदराबाद (तेलगांना)

मो. 8629402371, 9866228611

(3) डी. 46, मिनाल रेसीडेंसी, जेके रोड भोपाल

मो. 9993693558,

(4) डी.1767, सुदामा नगर, राममंदिर के पास

इंदौर मो. 9575599994, 6265534354

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ क्र.
विषय सूची		1
प्रस्तावना		2
पाठ 1	अनादिनिधन णमोकार मंत्र	3
पाठ 2	चार मंगल	4
पाठ 3	वर्णमाला स्वर	5
पाठ 4	वर्णमाला व्यंजन	9
पाठ 5	वर्णमाला गीत	23
पाठ 6	गणना	26
पाठ 7	वस्तु परिचय - जीव	36
पाठ 8	वस्तु परिचय - अजीव	39
पाठ 9	आओ पढ़े कहानी	41
पाठ 10	हम चैत्यालय जाएंगें	48
पाठ 11	धर्मायतन	49
पाठ 12	यह भी हिंसा है	51
पाठ 13	आओ गीत गायें	52

प्रस्तावना

ज्ञान समान न आन जगत में सुख कौ कारण ।
इहि परमामृत जन्म जरा मृत्यु रोग निवारन ।।

छहढाला में पंडित दौलतराम जी ने ज्ञान को सुख का कारण बताया है ।

न्यानं तिलोय सारं, न्यानं दंसेइ दंसनं मग्गं ।
जानदि लोय पमानं, न्यान सहावेन सुधमपानं।।258।।

ज्ञान समुच्चय सारजी ग्रंथ में आचार्य प्रवर श्रीमद जिन तारण तरण ने भी ज्ञान को स्वपर प्रकाशक बताया है। ज्ञान की महिमा तो यही है कि उपाध्याय परमेष्ठी को शिक्षक की संज्ञा दी है। सहस्त्र वर्षों से पाठ पढ़ाने की यह परंपरा जैन धर्म में विद्यमान है । आज जब ज्ञान का क्षयोपशम कम होता जा रहा है, तब जैन धर्म, दर्शन, सिद्धांत और आचरण की शिक्षा देने के लिये संचार माध्यमों और वास्तविकता से जोड़ने वाले साधनों की अत्यंत आवश्यकता है ।

शिक्षा को संस्कार बनाने हेतु नर्सरी कक्षा से ही जैन वाङ्.गमय का परिचय आवश्यक है। सरलतम पद्धति, आकर्षक डिजाइन, अभ्यास, प्रायोजना कार्य, व्यवहारिक क्रियाकलाप को बच्चों की उम्र के सापेक्ष मनोवैज्ञानिक तरीके से संयोजित करना आवश्यक है। पुरूस्कार एवं स्वल्पाहार का उद्देश्य आकर्षण है किंतु उसमें बँटने वाला बाजारू, अशुद्ध, खाद्य पदार्थ, चॉकलेट आदि उन्हें दी जा रही आचरण शिक्षा के लिये विरोधाभासी है जबकि तारण समाज का सूत्र है – जिसमें संक्षेप में सारभूत कथन होये, जाके सुने से जीव के मन, वचन, काय एकरूप हो जायें । ऐसे ही अनेक सूत्र तारण वाणी में गागर में सागर की तरह भरे हुये हैं। उन्होंने पूरा जिनागम मोतियों की तरह 14 ग्रंथों में पिरो दिया है। आवश्यकता है कि प्रथमतः जैन सिद्धांतों का परिचय हो। पद्धति रूढ़िमुक्त होकर नया स्वरूप स्वीकारें। प्रस्तुत पुस्तक में जिनागम में आये शब्दों, उनके अर्थ, प्रयोग और व्यवहार का परिचय, रंग, चित्र, रेखाचित्र, सुक्तियां, गीत, लघुकथा, छंद, फूलना, वार्तालाप के माध्यम से करवाया गया है। लेखन, वाचन, क्षमता का विकास करने हेतु प्रयोजना कार्य हैं। दक्षता संकेत, शब्दार्थ, विधा की विविधता इस पाठ्यक्रम की विशेषता है। समग्रतः जैन दर्शन के आधारभूत सिद्धांत इस आधार पाठ्यक्रम में सम्मिलित हैं ।

छिन्दवाड़ा के समाज श्री पं. जयचंद जी, मेरी माँ श्रीमती मालती जैन, पिता श्री रमेशचंद्र सिंघई, पति श्री दिलीप जैन, अग्रज श्री प्रमोद जैन, ब्र. डॉ. आरती दीदी, परिवार और समस्त समाज के बंधुओं के उत्साहवर्धन ने मुझे हमेशा इन कार्यों के लिये प्रेरित किया है। ब्र. श्री बसंतजी, ब्र. श्री आत्मानंद जी (श्री संघ) एवं समस्त साधकों द्वारा समाज उत्थान हेतु किया गया प्रयास, मुझे मेरे दायित्व की याद दिलाता आया है। आदरणीय दाजी श्रीमंत स्व. डालचंद जी एवं आदरणीय ब्र. गुलाबचंद जी, ब्र. जयसागर जी का वात्सल्यमयी सानिध्य आज हुये इस उपक्रम का बीज रूपक है।

वर्तमान अखिल भारतीय तारण–तरण जैन युवा परिषद् कार्यकारिणी के जुझारू, कर्मठ पदाधिकारियो नें पुस्तक प्रकाशन, पाठशाला एवं शिविर संचालन का बीड़ा उठाया है । जिसके निमित्त यह पाठ्यक्रम प्रस्तुत है। अ.भा.श्रीता.त. दि. जैन महासभा न्यास के वर्तमान कर्मठ, विद्वान सदस्यों का आभार जिन्होंने विकल्पों को साकार किया। संकलित समस्त रचनाकारों के प्रति आभार। आशा है पूर्वाग्रह रहित अवलोकन कर दिशा निर्देश करेंगे । विद्यार्थी लाभान्वित होंगे । सविनय ।

डॉ. मनीषा दिलीप जैन
छिन्दवाड़ा मो. नं. 9826449970

पाठ - 1

अनादिनिधन णमोकार मंत्र

णमो अरिहंताणं।
णमो सिद्धाणं।
णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं।
णमो लोए सव्व साहूणं।
एसो पंच णमोयारो।
सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं।
पढमं होहि मंगलं।

अरिहंतों को नमस्कार हो।
सिद्ध भगवंतों को नमस्कार हो।
आचार्यों को नमस्कार हो।
उपाध्यायों को नमस्कार हो।
लोक में सब साधुओं को नमस्कार हो।
यह पंच नमस्कार मंत्र
सब पापों का नाश करने वाला है।
इसे पढ़ने से सभी पाप गल जाते हैं।
और मंगल होता है ।

पाठ - 2

चार मंगल

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं,
सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं,
केवली पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा,
अरहंता लोगुत्तमा,
सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा,
केवलि पण्णत्तोधम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि,
अरहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि,
साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

पाठ - 3

वर्णमाला (52 अक्षर)

(स्वर वर्ण)

अ

अहिंसा

अभिनंदननाथ जी

आ

आत्मा

आदिनाथ जी

इ

इन्द्र

इन्द्रिय

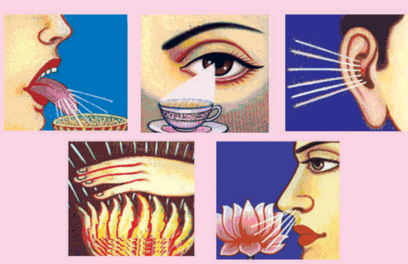

ई

ईशान

ईश्वर

अ

अनंतनाथ जी
अरनाथ जी

आ

आप्त
आगम

इ

इंद्रभूति
इंगित

ई

ईर्या
ईर्यापथ

वर्णमाला
(स्वर वर्ण)

उ

उत्तम

उपाध्याय जी

ऊ

ऊँ

ऊँकार

ॐ

ऋ

ऋषि

ऋषभदेव जी

उ
उवनम्
उपदेश

ऊ
ऊर्ध्व
ऊपर

ऋ
ऋजु
ऋजुगति

स्वराँजली

''अ'' से अरिहंत सिद्ध का सुमरण करके ।
''आ'' से आचार्यों को नमन करूँ ।
''इ'' से इस जीवन को सफल बनाने ।
''ई'' से ईर्ष्या द्वेष भाव का त्याग करूँ।
''उ'' से उपाध्याय मुनि से धर्म समझकर
''ऊ'' से ऊँचे पद को प्राप्त करूँ।
''ऋ'' से ऋजुता मन में धारण करके

वर्णमाला

(स्वर वर्ण)

ए

एषणा

एकेन्द्रिय

ऐ

ऐश्वर्य

ऐरावत

ओ

ओम

ओमकार

औ

औदारिक

औषधि

ए

एलक
एकत्व

ऐ

ऐहिक
ऐन्द्रिक

ओ

ओजाहार
ओला

औ

औदयिक
औरत

वर्णमाला
(स्वर वर्ण)
आयोगवाह

अं

अंतर

अंतरात्मा

अः

नमः

सिद्धेभ्यः

अं
मंत्र
तंत्र

अः
अतः
दुःख

स्वराँजली

"ए" से एकत्व भावना निशदिन भाऊँ
"ऐ" से ऐसी प्रभु से अर्ज करूँ
"ओ" से ओंकार का ध्यान लगाऊँ
"औ" से और सूक्ष्म लोभ का त्याग करूँ
"अं" से अंत में सिद्ध गति को पाकर
"अः" अः से सच्चे सुःख को प्राप्त करूँ

पाठ - 4

वर्णमाला (52 अक्षर)

(व्यंजन वर्ण)

क

कमल

कुँथुनाथ जी

ख

खण्डागम

खजाना

ग

गणधर जी

गति

घ

घन

घंटा

क

कर्म
केवलज्ञान

ख

खरभाग
खम्मामि

ग

ग्रंथ
गुणस्थान

घ

घनवात
घमण्ड

वर्णमाला
(व्यंजन वर्ण)

ङ.

पङ्कप्रभा

कङ्गन

पङ्कज
पङ्ख

ङ.

वर्ण मातृका

''क'' कर्म उदय जब पाप के आए
''ख'' से खोटे भाव बनाते हैं ।
''ग'' से गति निचली में जन्माकर
''घ'' से घोर दुःख दे जाते हैं
''ङ'' से शब्द शुरू करके वाक्य बना न पायेंगे।
भक्ति के पड्.ख लगा मोक्ष महल में जायेंगे ।।

वर्णमाला
(व्यंजन वर्ण)

च

चक्रवर्ती

चंदाप्रभु जी

छ

छंद

छहढाला

ज

जय

जिनेन्द्र

झ

झंकार

झंडा

च — चक्षु, चेतना

छ — छद्मस्थ, छद्मस्थवाणी

ज — जनम, जरा

झ — झंझा, झूठ

वर्णमाला
(व्यंजन वर्ण)

ञ

कञ्चन

पञ्छी (पंक्षी)

पञ्चमी (पंचमी)
अञ्जन चोर

ञ

वर्ण मातृका

''च'' से चोरी करना तजकर
''छ'' से छल प्रपंच न करना
''ज'' से जीवन सुखी बनाना
''झ'' से झगड़े से नित बचना
''ञ'' से शब्द शुरू करके वाक्य बना न पायेंगे।
ध्यान अग्नि में कञ्चन सा तपकर मोक्ष महल में जायेंगे ।।

वर्णमाला
(व्यंजन वर्ण)

ट

टापू

टोडरमल जी

ठ

ठाणा

ठंड

ड

डर

डांडिया

ढ

ढपली

ढाल

ट
टेक
टीका

ठ
ठोकर
ठेलना

ड
डंका
डमरू

ढ
ढोलक
ढालना

वर्णमाला
(व्यंजन वर्ण)

ण

णमो

णमोकार

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोएसव्वसाहूणं

णियमसार
णयचक्र

ण

वर्ण मातृका

"ट" से टटोले निज आतम को
"ठ" से ठग न पायेंगे
"ड" से डमरू बजे धर्म का
"ढ" से ढक्कन मोह का हटायेंगे
"ण" से णमोकार को ध्याकर परम सुखी बन जायेंगे
जन्म मरण के दुःख नष्टकर मोक्ष महल में जायेंगे ।।

वर्णमाला
(व्यंजन वर्ण)

त

तारणतरण

थ

थल

थाल

द

दया

दीपक

ध

धन

धर्मनाथ

त
तीर्थंकर
तप

थ
थह
थुति

द
दान
देह

ध
ध्रुव
धुरी

वर्णमाला
(व्यंजन वर्ण)

न

नय

नमिनाथ

नेमिनाथ
निर्जरा

न

वर्ण मातृका

"त" से तत्व ज्ञान पढ़कर
"थ" से निज में थमना सीखें
"द" से दुनिया झूठी समझकर
"ध" से धर्म से नाता जोड़ें
"न" से नाम कमाकर जग में अमर सदा बन जायेंगे
जन्म मरण के दुःख नष्टकर मोक्ष महल में जायेंगे ।।

वर्णमाला
(व्यंजन वर्ण)

प

पूजा-पुण्य

पद्मप्रभु जी

फ

फल

फूल

ब

बल

बाहूबली जी

भ

भगवान

भवन

प
- पार्श्वनाथ जी
- पुष्पदंत जी

फ
- फलादान
- फलाहार

ब
- बंधन
- ब्राह्मण

भ
- भव
- भजन

वर्णमाला

(व्यंजन वर्ण)

म

मोक्ष

मल्लिनाथ जी

महावीर जी

मुनि सुब्रत जी

म

वर्ण मातृका

''प'' से पुण्य कर्म करके
''फ'' से फल उत्तम ही पायेंगे
''ब'' से बहुत नेक बनकर
''भ'' से भक्ति में रम जायेंगे
''म'' से मोह जगत से तजकर निर्मोही बन जायेंगे
जन्म मरण के दुख नष्टकर मोक्ष महल में जायेंगे ।।

वर्णमाला
(व्यंजन वर्ण)

य

यश

यातना

र

राग

रत्नत्रय

ल

लोक

लेश्या

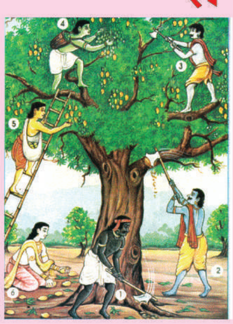

व

विश्व

वासुपूज्य जी

य — युगल, योनि

र — रक्षा, रत्न

ल — लाभ, लक्षण

व — विमलनाथ जी, वंदना

वर्णमाला
(व्यंजन वर्ण)

श

शांति

शांतिनाथ जी

ष

षट्

षटद्रव्य

स

समय

सुमतिनाथजी

ह

हर्ष

हास्य

श — शीतलनाथ जी, शमन शब्द

ष — षट्योग, षट्आवश्यक

स — संभवनाथ जी, सुपार्श्वनाथ जी

ह — हेतु, ह्रीं

वर्णमाला
(व्यंजन वर्ण)

क्ष

क्षमा

क्षत्रिय

त्र

त्रिभंगीसार

त्रिलोक

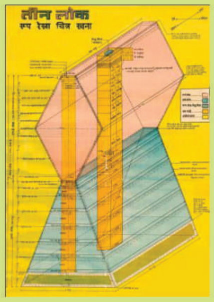

ज्ञ

ज्ञायक

ज्ञानेन्द्रिय

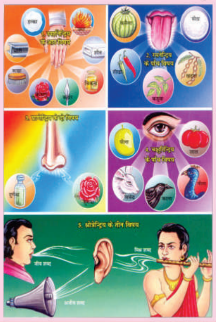

श्र

श्रावक

श्रेयांसनाथ जी

क्ष — क्षेत्रपाल, क्षेमंकर

त्र — त्रस, त्रिशला देवी

ज्ञ — ज्ञाता, ज्ञेय

श्र — श्राविका, श्रमण

वर्णमाला
(व्यंजन वर्ण)

ड़ — बड़ाई
दौड़ना

ढ़ — बढ़ना
पढ़ाई

ड़ — माड़ना
दौड़

ढ़ — काढ़ना
काढ़ा

वर्ण मातृका

"य" से यज्ञ करें हम ऐसा
"र" से राग द्वेष को तज के
"ल" से लोभ रंच न करके
"व" से वन में तपस्या करने
"श" से शील को धारण करके परम ब्रम्ह बन जायेंगे।
"ष" से षट् आवश्यक पालन करके
"स" से सद् ग्रहस्थ बन जायेंगे
"ह" से हीन भावना तजकर
"क्ष" से क्षोभ नशायेंगे
"त्र" से त्राण जगत की करके
"ज्ञ" से ज्ञानी हम बन जायेंगे
जन्म मरण के दुःख नष्टकर मोक्ष महल में जायेंगे ।।

पाठ - 5

वर्णमाला गीत

अ से अरिहंतों को भजना, आ से आवश्यक रत रहना।
इ से इच्छा अच्छी रखना, ई से ईश्वर को न तजना।।
उ से उच्च काम सब करना, ऊ से ऊँचे पद पर रहना।
ए से एकाकी ना बनना, ऐ से ऐलक जी को नमना।।
ओ से ओम सदा ध्याओ रे, औ से औषध दान करो रे।
अं से अंबर जैसे बनना, और अः से आह न भरना।।
क से कमल बनो तुम महको, ख से खट-खट में ना अटको।
ग से गल्ती कभी न करना, घ से घमण्ड भी न करना।।
च से चतुर बनो गुण पाओ, छ से छल-बल ना अपनाओ।
ज से जय-जयकार लगाओ, झ से झण्डा तुम फहराओ।।
ट से मन में टीस न रखो, ठ से ठहरो, समझो देखो।
ड से डगर-डगर मत डोलो, ढ से ढकी बात न खोलो।।
ण से णमोकार को जपना, त से तप से कभी न डरना।
थ से थर-थर भय न लाओ, द से दम को नहीं गँवाओ।।
ध से धरम अहिंसा पालो, न से नमन विनय अपनालो।
प पतित नहीं तुम होना, फ से फफक-फफक कभी न रोना।।
ब से बन्दर से ना उचको, भ से भटकाओ ना भटको।
म से मन्दिर प्रतिदिन जाओ, य से यश-सम्मान कमाओ।।
र से रक्षा सबकी करना, ल से लेश्या को तुम साधो।
व से वचन सत्य तुम बोलो, श से शब्द मधुर मुख खोलो।।
ष से षट्कायों को पालो, स से सबका साथ निभा लो।
ह से हठ को ना अपनाओ, क्ष से क्षत्रिय-धर्म निभाओ।।
त्र से त्रस्त कभी न रहना, ज्ञ से ज्ञानी बनकर रहना।
ऋ से ऋषी बनो कल्याणी, सुव्रत की जो अमर निशानी।।

(साभार संकलन)

अभ्यास

प्रश्न 1 बिन्दुओं को मिला कर शब्द लिखिये।

ॐ

ॐ

इंद्रिय

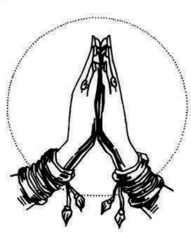

नमः

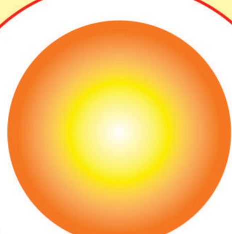

आत्मा

लोक

अभ्यास

प्रश्न 2 रेखा खींचकर मिलान कीजिए।

अ	महावीर जी
त	योग
म	लक्षण
श्र	छहढाला
य	भरतचक्रवर्ती जी
भ	अजितनाथ जी
ल	श्रेयांसनाथ जी
क	तीर्थंकर
छ	रामचंद्र जी
र	कुँथुनाथजी

पाठ 6
गणना

1	१	एकम्	आत्मा
2	२	द्वितीया	जीव-अजीव
3	३	तृतीया	सम्यग्दर्शन,ज्ञान,चारित्र
4	४	चतुर्थी	क्रोध,मान,माया,लोभ
5	५	पंचमी	हिंसा, झूठ, चोरी कुशील, परिग्रह
6	६	षष्ठी	पूजा, उपासना, स्वाध्याय संयम, तप, दान
7	७	सप्तमी	सात तत्व
8	८	अष्टमी	आठ कर्म
9	९	नवमी	नव पदार्थ
10	१०	दशमी	दस धर्म

गणना

11	११	ग्यारस	प्रतिमा
12	१२	बारस	भावना
13	१३	तेरह	चारित्र
14	१४	चौदस	गुणस्थान
15	१५	पूर्णिमा	प्रमाद
16	१६	षोडश	सोलहकारण भावना
17	१७	सप्तदश	मरणभेद
18	१८	अष्टादश	दोष
19	१९	एकोंविश	जीवसमास
20	२०	विंशति	प्ररूपणा

गणना

21	२१	एकविंशति	औदयिक भाव
22	२२	द्विविंशति	अभक्ष्य
23	२३	त्रिविंशति	वर्गणा
24	२४	चतुर्विंशति	तीर्थंकर
25	२५	पंचविंशति	क्रियाएँ
26	२६	षट्विंशति	प्रथव्या
27	२७	सप्तविंशति	पंचेन्द्रिय विषय
28	२८	अष्टविंशति	साधु के मूलगुण
29	२९	नवविंशति	अंकप्रमाण मनुष्य
30	३०	त्रिंशत	णमोकार व्यंजनवर्ण

गणना

1	आत्मा एक अखण्ड है।
2	जीव अजीव दो भिन्न है।
3	बहिरात्मा, अंतरात्मा, परमात्मा तीन भेद।
4	चार कषाय बुरी बला।
5	पाँच पाप से बचना है।
6	छः द्रव्यों से विश्व बना।
7	सात तत्वों की पहचान करो।
8	आठ कर्मों को क्षय करो।
9	नौ पदार्थों को जान लो।
10	दस धर्म को धारण करो।

गणना

11	ग्यारह प्रतिमाएँ पालन करो ।
12	बारह भावनाएं भाना है ।
13	तेरह चारित्र अपनाना है ।
14	चौदह होते गुणस्थान ।
15	पूर्ण सुख को पाना है ।
16	सोलह कारण भावना भाओ ।
17	सत्रह शक्तियाँ हैं बलशाली ।
18	अठारह दोष से रहित मुनि ।
19	उन्नीस है जीव समास ।
20	बीस प्ररूपना भेद कहे ।

गणना

एक है आत्मा

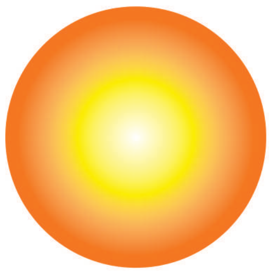

जीव अजीव दो भिन्न सदा

जीव

अजीव

अनंत चतुष्टय

अनंत दर्शन

अनंत ज्ञान

अनंत सुख

अनंत वीर्य

पाँच इंद्रियाँ

स्पर्शन

रसना

घ्राण

चक्षु

कर्ण

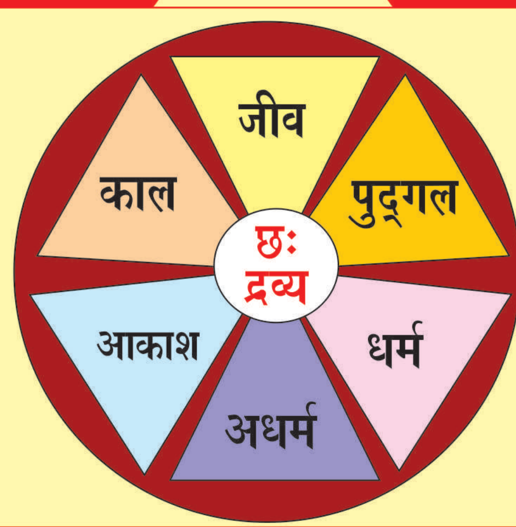

गणना

सात जीव तत्व

- अजीव
- आस्त्रव
- बंध
- संवर
- निर्जरा
- मोक्ष

सात तत्वों को ठोंक बजा

आठ मद

- ज्ञान मद
- जाति मद
- कुल मद
- बल मद
- पूजा मद
- ऋद्धि मद
- तप मद
- रूप मद

आठ कर्मों को क्षय करो

नव जीव पदार्थ

- अजीव
- आस्त्रव
- बंध
- संवर
- निर्जरा
- मोक्ष
- पुण्य
- पाप

नौ पदार्थों को जान लो

दस लक्षणधर्म

- उत्तम क्षमा
- उत्तम मार्दव
- उत्तम आर्जव
- उत्तम सत्य
- उत्तम शौच
- उत्तम संयम
- उत्तम तप
- उत्तम त्याग
- उत्तम आकिंचन्य
- उत्तम ब्रम्हचर्य

दस धर्म को धारण करो

धर्म पहाड़ा दो का

2

2 x 1 = 2	कर्मों को धो
2 x 2 = 4	संयम को धार
2 x 3 = 6	सदा सत्य कह
2 x 4 = 8	करो ग्रंथ पाठ
2 x 5 = 10	जग से हो बस
2 x 6 = 12	धर्म हमें प्यारा
2 x 7 = 14	गुरू ग्रंथ चौदह
2 x 8 = 16	धर्म है अनमोला
2 x 9 = 18	जिनने धर्म धारा
2 x 10 = 20	वे बन गये ईश

धर्म पहाड़ा तीन का

3

3 x 1 = 3	रत्नत्रय तीन
3 x 2 = 6	करो कर्म आवश्यक छह
3 x 3 = 9	नो कषाय नौ
3 x 4 = 12	व्रत पालो बारह
3 x 5 = 15	प्रमाद होते पंद्रह
3 x 6 = 18	सम्यक के हैं दोष अठारह
3 x 7 = 21	औदयिक भाव हैं इक्कीस
3 x 8 = 24	तीर्थंकर बस चौबीस
3 x 9 = 26	चौबीसढाणा की गाथा २६
3 x 10 = 30	णमोकार में व्यंजन तीस

4

धर्म पहाड़ा चार का

4 x 1 = 4	कषायें न करो चार
4 x 2 = 8	सिद्धों के मूलगुण आठ
4 x 3 = 12	संसार में न आना दोबारा
4 x 4 = 16	भाओ भावना सोलह
4 x 5 = 20	विदेह क्षेत्र के तीर्थंकर बीस
4 x 6 = 24	भरत क्षेत्र के तीर्थंकर चौबीस
4 x 7 = 28	साधु गुण है अट्ठाईस
4 x 8 = 32	सौधर्म इंद्र के विमान बत्तीस
4 x 9 = 36	आचार्यों के गुण छत्तीस
4 x 10 = 40	भवनवासी देव चालीस

5

धर्म पहाड़ा पाँच का

5 x 1 = 5	पंचप्रभु का करना ध्यान
5 x 2 = 10	धारण करो धर्म दस
5 x 3 = 15	पंद्रह प्रमाद से बचना
5 x 4 = 20	पंचविदेह में तीर्थंकर बीस
5 x 5 = 25	पच्चीस धनुष मल्लिनाथ जी
5 x 6 = 30	तीस धनुष की काया अरहनाथ जी
5 x 7 = 35	पैंतीस धनुष कुंथुनाथजी
5 x 8 = 40	चालीस धनुष शांतिनाथजी
5 x 9 = 45	पैंतालीस धनुष धर्मनाथजी
5 x 10 = 50	पचास धनुष काया अनंतनाथजी

अभ्यास

प्रश्न 1 दिये गये शब्द के सामने संख्या शब्द और अंक लिखो ।

आत्मा	एक	1
जीव-अजीव		
तत्व		
सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र		
आवश्यक		
द्रव्य		
धर्म		
पाप		
कषाय		
तीर्थंकर		

प्रश्न 2 नाम गिनकर संख्या लिखिये ।

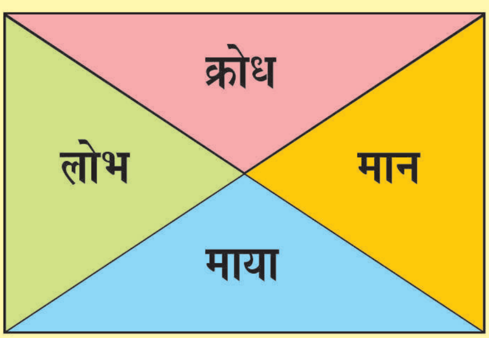

संख्या ________________

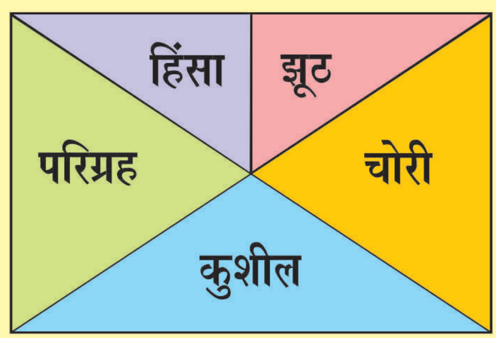

संख्या ________________

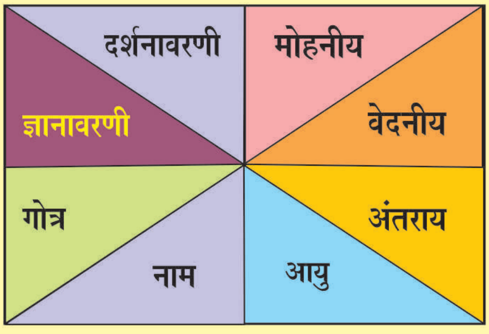

संख्या ________________

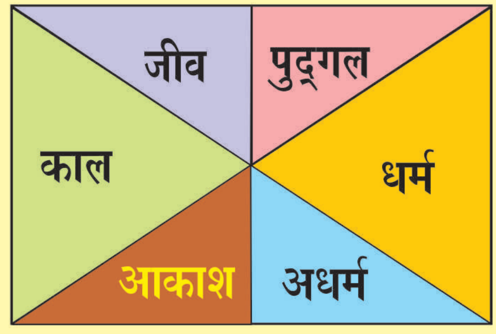

संख्या ________________

पाठ 7
वस्तु परिचय

जीव

जो जानता है जो देखता है ।
जिसमें ज्ञान है । वह जीव है ।

मैं जीव हूँ । मुझमें ज्ञान है ।

मनुष्य गति में जीव :-

बालक

युवक

पुरूष

वृद्ध

बालिका

युवती

महिला

वृद्धा

वस्तु परिचय

जीव

जो जानता है जो देखता है ।
जिसमें ज्ञान है । वह जीव है ।

मैं जीव हूँ । मुझमें ज्ञान है ।

तिर्यंच गति में जीव :-

देव गति में जीव

ज्योतिष देव, सौधर्म इंद्र, भवनवासी, विमानवासी, व्यंतरदेव

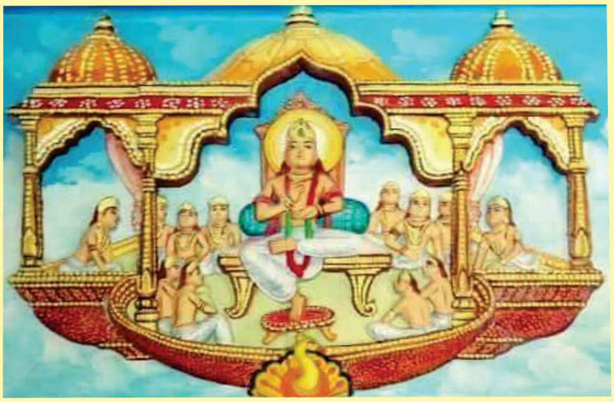

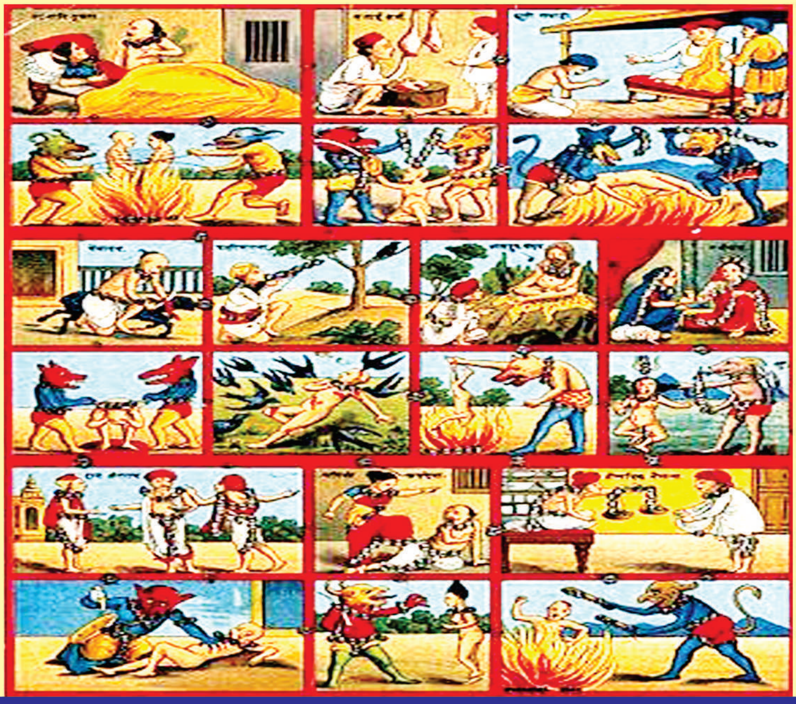

नरक गति में जीव

स्थान अजीव हैं ।

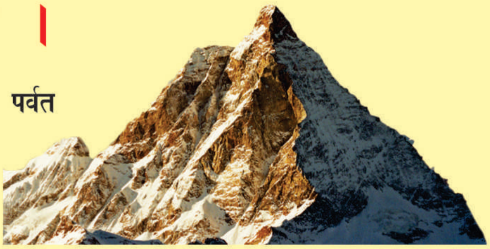
पर्वत

मंदिर

पाठशाला

घर

अन्य वस्तुएँ अजीव हैं ।

कार्टून

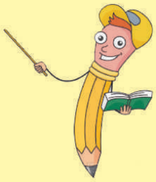

ढ़ोलक

लैपटॉप

शरीर के अंग अजीव हैं ।

आँख

जीभ

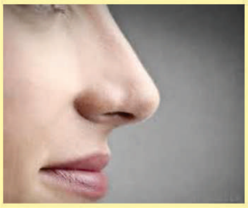
नाक

हाथ

पाठ 9
आओ पढ़ें कहानी
पहला पाप : हिंसा

बहुत पुरानी बात है । राजा यशोधर के राज्य में शांति हो जाये इसलिये उनकी माँ ने उन्हें चण्डिका देवी के सामने बलि देने के लिए कहा। राजा यशोधर हिंसा नहीं करना चाहते थे। माँ की प्रेरणा से उन्होंने आटे का मुर्गा बनाया। बलि देने का संकल्प किया और चण्डिका देवी के सामने आटे के बने मुर्गे की बलि दे दी।

बच्चों! आटे के मुर्गे में जीवित होने की कल्पना करके उसकी बलि देने से भी राजा यशोधर को हिंसा का पाप बंध हुआ। इस परिणाम से राजा यशोधर और उनकी माँ के जीव ने छः भवों तक तिर्यंच पर्याय में जन्म ले-लेकर अनंत दुःख सहन किये। जब वे छटवें भव में मुर्गा-मुर्गी हुए तब मृत्यु के समय भावलिंगी संत मुनिराज के मुख से उन्हें णमोकार मंत्र सुनने मिला। परिणामों की विशुद्धि से वे फिर से राजा यशोमति के पुत्र पुत्री - अभयरूचि और अभयमति हुए। बचपन से ही उन्हें जाति स्मरण हो गया। उन दोनों ने वैराग्य पूर्वक दीक्षा ले ली। वन में जल्लादों ने उन्हें बलि देने के लिए बंधक बनाकर ले आये। तब क्षुल्लक अभयरूचि ने अपने पूर्वजन्म में किये गये संकल्पी हिंसा की कथा सुनायी। सभी इस प्रसंग को सुनकर प्रायश्चित करने लगे। सभी ने संकल्पी हिंसा, मारना, काटना, हत्या करना, मारकर खुश होना इन सबका त्याग कर दिया। और जैन धर्म की अहिंसा को धारण किया।

शिक्षा :-

1. हमें भी समस्त जीवों की रक्षा का संकल्प लेना चाहिए।
2. प्रमाद, असावधानी से भी किसी जीव का घात न हो ऐसा संकल्प लेना चाहिए।
3. दूसरों के प्राणों का घात करना, मारना, सताना, बंधक बनाना, इन सबकी प्रेरणा देना, अनुमोदना, समर्थन करने से हिंसा का पाप बंध होता है। जो अनंत जन्मों तक दुःख देता है।
4. जैन धर्म का मूल है - अहिंसा धर्म मूलस्य। अहिंसा परमो धर्मः।
5. मन-वचन-काय से स्वयं या दूसरों को दुःख पहुँचाना, शारीरिक कष्ट देना, द्रव्य हिंसा और आत्मीय भावों से हिंसा के परिणाम करना भाव हिंसा है।
   आप्रादुर्भावः खलु रागादीनांभवत्यहिंसेति। तेषामेवोत्पत्तिर्हिंसेतिजिनागमस्य संक्षेपः।।
   ।।पुरूषार्थसिद्धिउपाय।।

आओ पढ़ें कहानी

दूसरा पाप : झूठ

बहुत ही सुंदर सुहाना मौसम था। पर्वत, नारद, वसु तीनों शिष्य अपने गुरू आश्रम से विदा होकर घर जाने वाले थे। अंत में गुरू ने सूत्र पढ़ाया-

''अजैर्यष्टवयं'' और विदा कर दिया।

पर्वत गुरू का पुत्र था, वसु राजा था और नारद पंडित था। राजा वसु न्याय में प्रसिद्ध था। पर्वत की माँ गुरू माँ थी। एक बार वसु राजा की सभा में पर्वत को लाया गया। जो गुरू द्वारा बताये गये सूत्र का अर्थ - ''बकरे की बलि करना चाहिए।'' ऐसा करके समस्त राज्य में हिंसा कराना चाहता था। पर्वत की माँ को वचन देकर राजा वसु यह जानते हुए भी कि इस सूत्र का अर्थ ऐसा करने से हिंसा बढ़ेगी, तो भी उसका समर्थन करने लगा। तब नारद ने विरोध किया। बताया कि सूत्र का अर्थ है - ''पुराने धान (दोबारा न ऊगने वाले) से होम करना चाहिए।'' किन्तु राजा वसु झूठ ही बोलता गया।

इस भीषण पाप से हिंसा भी बढ़ी और उसी समय राजा का अंतिम समय आ जाने से सिंहासन धरती में धँस गया । राजा वसु नरक गति में चला गया। इस घटना को देखकर सभी ने झूठ न बोलने का संकल्प किया। जिस वचन के कहने से हिंसा होती हो, ऐसा वचन न कहने की प्रतिज्ञा की।

शिक्षा :-

१. हमें भी कभी झूठ वचन न कहने की प्रतिज्ञा करना चाहिए।
२. जिस बात को जैसा सुना है, देखा है वैसा न कहकर अन्यथा कहना झूठ है।
३. ऐसे झूठ से प्राणी का घात होता है तो हिंसा का भी पाप लगता है।
४. गुरूवर कहते हैं ऐसा सत्य जिससे जीवों की हिंसा हो जाये वह भी झूठ ही है।

आओ पढ़ें कहानी

तीसरा पाप : चोरी

बहुत पुरानी बात है । किसी नगर में रूद्रदत्त नामक सेठ रहता था। उनका मित्र सुरेन्द्रदत्त बहुत ही धार्मिक, नित्य पूजा नियम करने वाला सज्जन पुरूष था। एक बार सुरेन्द्र दत्त अपने परम मित्र रूद्रदत्त को बहुत सारा धन अमानत पर सौंप कर धन कमाने के लिए विदेश चले गये। रूद्रदत्त ने चोरी का भाव परिणाम करके अपने मित्र का धन खर्च कर दिया। जुआँ आदि सप्त व्यसनों में धन समाप्त होने पर कोतवाल द्वारा मारा भी गया। ऐसे बुरे परिणामों के कारण नरकादि अनेक पर्यायों में दुःख भोगे। अनंत भवों के बाद गरीब ब्राह्मण के घर कुरूप बालक के रूप में जन्म लिया। उसी नगर में दिगम्बर मुनिराज के उपदेश से उसे पापों को त्यागने का शुभ परिणाम हुआ। उसने प्रायश्चित करते हुए संयम धारण किया। मुनि धर्म अंगीकार किया। अंत में अहमिंद्र देव हुआ।

बच्चों! चोरी आदि पापों से नरकों, तिर्यंचों में मनुष्य गति में भी अनेक दुःख भोगने पड़ते हैं।

शिक्षा :-

१. बिना अनुमति किसी की गिरी, पड़ी, रखी या भूली हुई वस्तु ग्रहण करना, किसी को दे देना भी चोरी है।
२. हमें भी बिना अनुमति किसी वस्तु को हाथ नहीं लगाना चाहिए।
३. ऐसी चोरी की भावना अनंत दुःख देने वाली होती है। ऐसे लोगों को पहले तो चोर कहकर लोग चिढ़ाते हैं।
४. सारे पाप दुःख के कारण है। पाप करने से न तो सुख मिलता है और न संतोष।

आओ पढ़ें कहानी

चौथा पाप : कुशील

बहुत पुरानी बात है । अयोध्या के राजकुमार राम की पत्नी सीता बहुत ही सुन्दर, शीलवान थी। वनवास के समय लंका के राजा रावण ने कुशील के परिणाम करके सीता जी का अपहरण कर लिया। सीता शीलवान थी। रावण ने भी उनकी अनुमति लेना उचित समझा। अनेक बार प्रयास करने पर भी सीता जी को अपने वश में नहीं कर सका। रामचंद्र ने, लक्ष्मण एवं हनुमान आदि की सहायता से रावण को मनाने की बहुत कोशिश की । रावण के न मानने पर लक्ष्मण द्वारा उनका वध हो गया। भविष्यकाल के चौबीस तीर्थंकरों में, तीर्थंकर होने वाले रावण को मरकर नरक में जाना पड़ा। पर स्त्री के प्रति कुदृष्टि का यह परिणाम है। इसलिये कुशील सदा त्यागने योग्य है।

शिक्षा :-

१. पर स्त्री या पुरूष के प्रति अनुराग कुशील कहलाता है।
२. ऐसा पाप परिणाम करने वाला व्यभिचारी, पापी कहलाता है।
३. ऐसे लोगों की लोक में सदा निंदा ही होती है।
४. शीलवान स्त्री और पुरूष जगत में पूज्य होते हैं।
५. सीता जी अग्नि परीक्षा में शीलवान घोषित हुई और सती नारियों में सम्मान पाती हैं।
६. हमें भी कुशील से बचना चाहिए।

आओ पढ़ें कहानी

पाँचवा पाप : परिग्रह

'पिण्याक गंध' नाम का एक बहुत ही कंजूस सेठ था। करोड़ों रूपये होने पर भी वह न दान देता था, न स्वयं के लिये व्यय करता था। वह स्वयं तेल की खली (पिण्याक) खाकर पेट भरता था। जिसके कारण उसके शरीर से खली की गंध आने लगी थी। इसलिये उसका नाम पिण्याकगंध पड़ा। वह अपने बच्चों को पड़ोसी से कुश्ती खेलने के लिए भेजता था, ताकि उन बच्चों के शरीर का तेल इन बच्चों को लग जाये। एक बार राजा के तालाब में खुदाई करते समय सोने की सलाई से भरा संदूक मिला। जिसे लोहे की सलाई बोलकर अत्यंत कम दामों में पिण्याकगंध ने खरीद लिया। जब सारा भेद राजा के सामने खुला तो राजा ने उसका सारा धन जब्त कर लिया। परिवार के सारे सदस्यों को जेल में डाल दिया। इस घटना से पिण्याकगंध को इतनी पीड़ा हुई कि अतिलोभ के कारण उसने अपना पैर तोड़ लिया। अंत में मरकर नरक चला गया। सच है बुरे काम का बुरा नतीजा होता है।

शिक्षा :-

१. अति लोभ और मोह के वश होकर जमीन, जायदाद, धन, धान्य, गाय, बैल, बर्तन गाड़ी आदि जोड़कर रखना परिग्रह कहलाता है।
२. ऐसा परिग्रह का लोभ, नरक गति का बंध कराता है।
३. लोभी, परिग्रही जीव सदा दुखी रहता है।
४. हमें ऐसे परिग्रह का लोभ छोड़कर उसका परिमाण कर लेना चाहिए।
५. प्रत्येक वस्तु की सीमा तय कर लेने से परिग्रह का दोष नहीं लगता है।

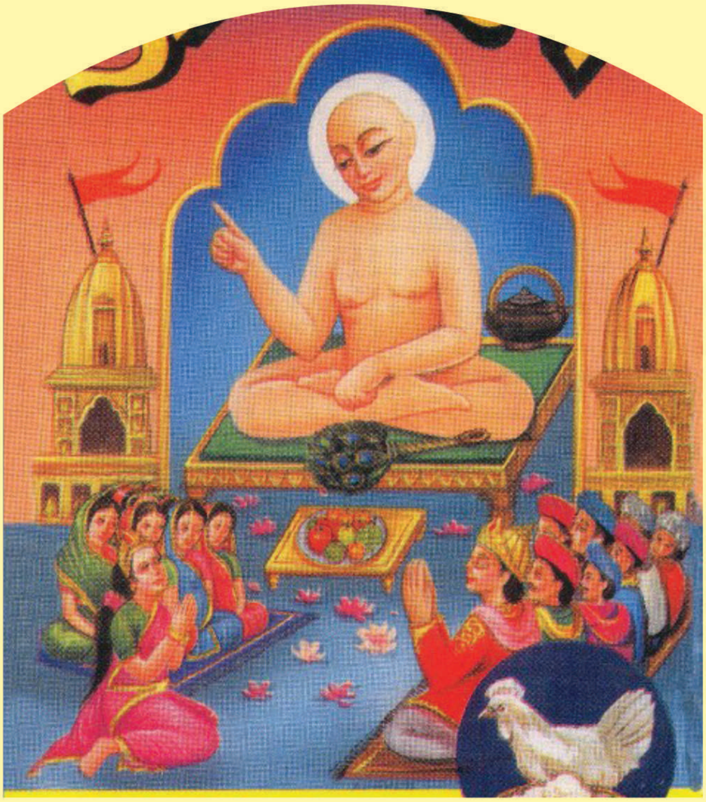

अभ्यास

प्रश्न.1 चित्र देखकर पता लगाओ कि यह कहानी कौन सी है?

प्रश्न.2 आटे का मुर्गा जीव है या अजीव पता करो।

प्रश्न.3 हिंसा पाप की अन्य कहानियों को याद करके सुनाओ।

प्रश्न.4 हिंसा किसे कहते हैं?

प्रश्न.5 हिंसा पाप से बचने के लिए तुम क्या करोगे? लिखो ।

प्रश्न.6 हिंसा की किसी कहानी पर चित्र बनाओ।

प्रश्न.1 झूठ बोलने का क्या फल है? लिखिये ।

प्रश्न.2 राजा वसु को क्या न्याय करना था?

प्रश्न.3 यदि आप राजा वसु होते तो क्या करते ? बताईये।

प्रश्न.4 ''अजैर्यष्टवयं'' का क्या अर्थ है?

प्रश्न.5 बलि देना क्यों पाप है?

प्रश्न.6 झूठ पाप की परिभाषा बताईये ।

प्रश्न.7 कहानी पर चित्र बनाकर रंग भरिए।

अभ्यास

प्रश्न.1 चोरी पाप किसे कहते हैं?
प्रश्न.2 चोरी पाप में क्या-क्या करना सम्मिलित है?
प्रश्न.3 यदि आप रूद्रदत्त होते तो क्या करते?
प्रश्न.4 सप्त व्यसन पर दीदी से बातचीत करो।
प्रश्न.5 पाप से बचने का क्या उपाय है?
प्रश्न.6 अंजन चोर की कहानी पता करो?
प्रश्न.7 चोरी की किसी कहानी पर चित्र बनाकर रंग भरो?

प्रश्न.1 चित्र देखकर पता लगाओ कि यह कहानी कौन सी है?
प्रश्न.2 किसी नारी को बुरी नजर से देखना क्या कहलाता है?
प्रश्न.3 कुशील पाप की अन्य कहानियों को याद करके सुनाओ।
प्रश्न.4 कुशील किसे कहते हैं?
प्रश्न.5 कुशील पाप से बचने के लिए तुम क्या करोगे? लिखो ।
प्रश्न.6 कुशील की किसी कहानी पर चित्र बनाओ।

प्रश्न.1 पिण्याक गंध कौन था?
प्रश्न.2 लोभ और परिग्रह पर बातचीत करो।
प्रश्न.3 परिग्रह पाप की परिभाषा बताओ ।
प्रश्न.4 परिग्रह पाप से बचने का क्या उपाय है?
प्रश्न.5 परिग्रह पाप की अन्य कहानी पता करो।
प्रश्न.6 परिग्रह पाप की कहानी का चित्र बनाकर रंग भरो।

पाठ 10

हम चैत्यालय जायेंगे

मंदिर जाना मेरा काम
जहाँ मिलता आत्म श्रृद्धान
रोज सबेरे उठकर कहते
हम सबसे जय जिनेन्द्र भगवान
दाँत नख रहे न मैले मैले
साफ-सफेद पहनकर कपड़े
पहुँचे मंदिर झटपट दौड़े
छने पानी से पग धोते
निःसहि निःसहि कहते हम
स्वस्ति मंगल गाते हम
आँखे बंद कर धीमे से
सिर झुकाकर करे नमन
बैठ पद्मासन, करे मनन
आत्म ही है देव निरंजन
देव स्तुति हम गाते साथ
गुरू ग्रंथों का करते पाठ
आरति हो बचें रति से
चंदन सम शीतल माथ
सामायिक कर शांत भाव से
ऊँ मंत्र का करते जाप
हम बच्चे प्रभु वीर बनेंगे
सबसे हँसकर जय जिनेन्द्र कहेंगे
पाप कषाय से बचने हम
प्रतिदिन चैत्यालय जायेंगे ।

याद रखेंगे मंदिर जाने की विधि

1. सुबह जल्दी सोकर उठना ।
2. शरीर की सफाई पहले करना ।
3. सबसे पहले मंदिर जाना ।
4. गंदे हाथ पैर, झूठा मुँह साफ करना ।
5. निःसहि-निःसहि बोलते हुये प्रवेश करना ।
6. तत्व मंगल कह / सच्चे देवगुरू, शास्त्र का स्मरण करना ।
7. दर्शन, स्तुति, पाठ करना ।
8. स्वाध्याय करना, ग्रंथ पढ़ना ।
9. सामायिक करना ।
10. मंदिर विधि में मन लगाना ।
11. आरती, चंदन, तिलक को भावपूर्वक करना ।
12. मंदिर में बात नहीं करना, खेलना नहीं और खाना नहीं ।
13. सबसे प्रेमपूर्वक जय तारण कहना ।
14. अपना मन शांत रखना ।

पाठ - 11
धर्मायतन

मैं एक बालक हूँ। मैं मनुष्य हूँ। पर मैं जीव हूँ। मेरे में ज्ञान है।
मैं जानता देखता हूँ। मेरा नाम आत्मा है।

मैं रोज सबेरे नहा-धोकर, मंदिर जी के दर्शन करने जाता हूँ।
दरवाजे पर हाथ-पैर धो, सिर झुका मंदिर में जाता हूँ।
निःसहि निःसहि कहता हूँ, जिनवाणी दर्शन कर निज दर्शन करता हूँ
णमोकार मंत्र का पाठ करूँ मैं, आतम देव को देहालय में देखता हूँ
जाप की माला हाथ में लेकर, ऊँ नमः सिद्धम् जपता हूँ
108 बार मंत्र की जाप, एक-एक मोती खिसकाकर करता हूँ
जिनवाणी जी को बाजौट पर धरता हूँ, जितना बनता, उतना पढ़ता हूँ
ध्यान करूँ मैं निज चेतन का, जीव भिन्न-अजीव भिन्न समझता हूँ
स्तुति-पाठ-विनय कर, स्वाध्याय में मन लगाता हूँ
गीत फूलना भजन आरती कर, तत्व मंगल गाता हूँ ।
वेदीजी पर रखकर जिनवाणी माँ, चैत्यालय उर धरता हूँ
निज-दर्पण में देखूँ में मुझको, माथे पर शीतल चंदन लगाता हूँ
छत्र-चँवर, भामंडल-झारी, घंटा हरता मन की व्याधि
हाथ जोड़ शीश नवाकर, जय जिनेन्द्र कहता हूँ।

अभ्यास

प्रश्न : सोच समझकर उत्तर दीजिए ।

1. तुम कौन हो ?
2. मंदिर जाने से पहले क्या करते हो ?
3. जिनवाणी का दर्शन कर क्या करते हो ?
4. मंदिर में किसका पाठ करते हो ?
5. देहालय में कौन है ?
6. जाप का मंत्र क्या है ?
7. जाप की माला में कितने मोती हैं ?
8. जिनवाणी जी को कहाँ रखते हैं ?
9. जिनवाणी पढ़कर क्या ध्यान करते हैं?
10. दर्शन विधि के साथ क्या-क्या करते हैं ?
11. चैत्यालय में क्या-क्या होता है ?
12. चंदन कैसा होता है ?
13. दर्पण में क्या देखते हैं ?
14. हाथ जोड़कर क्या कहते हैं ?

पाठ 12

यह भी हिंसा है ।

मैं तेरे दाँत तोड़ दूँगा, सिर काट डालूँगा, हाथ-पैर तोड़ दूँगा आदि कहना भी हिंसा है।

किसी बीमार-तड़फते, बहुत दिनों से बिस्तर पकड़े हुए व्यक्ति के लिए भगवान से मरने की प्रार्थना करना भी हिंसा है।

जन्मते ही मर जाता तो अच्छा था। हे भगवान् ! ये कब मरेगा, ये जल्दी मर जावे तो हम साता से जीवें। इस प्रकार विचार करना भी हिंसा है।

हे भगवान्! अब तो मुझे या इसको उठा ले, भगवान् मुझे कब उठायेगा, परेशान होकर ऐसे विचार करना भी हिंसा है।

कोई बहुत दिन से बीमार है, दुखी है उसके मर जाने पर अच्छा हुआ बेचार बहुत दुखी था सुखी हो गया यह सोचना या कहना भी हिंसा है।

पागल कुत्ते आदि को मारने, मरवाने आदि के लिए कहना या मरने पर खुश होना भी हिंसा है।

देवी-देवता, धर्म-पुण्य आदि के लिये मुर्गा, बकरा आदि की बलि चढ़ाना भी हिंसा है।

बीमारी को ठीक करने, दूसरे की भूख मिटाने अथवा दूसरे को संतुष्ट करने के लिए किसी को मारना भी हिंसा है।

क्लेश, लड़ाई, झगड़ा सांसारिक प्रपंचों से बचने के लिए आत्महत्या कर लेना बहुत बड़ी हिंसा है।

पाठ 13
आओ गीत गायें

सदा सत्य बोलो

हरिश्चन्द्र जो बच्चा था, मन का सीधा सच्चा था ।
गया बनारस जब पढ़ने, रखे पास रूपये उसने।।
मिले राह में कुछ डाकू, उसको पकड़ दिखा चाकू।
कहे कहाँ से आया तू, क्या-क्या चीजें लाया तू ?
सच बतलाया बालक ने, लिये पाँच सौ रूपये मैं।
डाकू सोचे यह बच्चा, झूठ बोलता है अच्छा।।
रखे सामने जब पैसे, डाकू बोले तब ऐसे।
डाकू कहलाते हैं हम, ले लेंगे तेरा यह धन।।
करना जो करलो तुम तो, माँ ने बतलाया हमको।
चाहे दुख से तुम रो लो, पर ना झूठ कभी बोलो।।
सही बात डाकू सुनकर, डाका चोरी तब तजकर।
बच्चे से शिक्षा पायी, सत्य बोलना सुखदायी।।

मैं तो हूँ एक अखण्ड जीव ।
शरीर, मकान हैं अजीव ।।
मैं तो हूँ ज्ञान-दर्शन वाला ।
अजीव नहीं कुछ जानता ।।
मैं हूँ ज्ञायक आतम राम ।
शरीर है अजीव अज्ञान ।।
मैं अजीव को जानता हूँ ।
अजीव मुझे नहीं जानता ।।
जीव अजीव हैं अलग-अलग।
यह निर्णय कर लो सब ।।

आतमा बने परमात्मा, हो शांति सारे देश में । है देशना सर्वोदयी, महावीर के संदेश में।।

गुरू उवएसिउ गुपत रूइ, गुपत न्यान सहकार। तारण-तरण समर्थ मुनि, भव संसार निवार ।।

जिनवाणी के ज्ञान से, सूझे लोकालोक। सो वाणी मस्तक नमों, सदा देत हों ढोंक।।

राग-रागिनी में कहें, इस आत्मा के गीत ।
एक बार गायें इन्हें, जन्म-जन्म के गीत ।।
आत्मा को हम धो डालें, निर्मल जल संगीत।
भय षिपनिक इस ग्रंथ के , ममल फूलना सीख ।।